वन उत्पादकता संस्थान, रांची

(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून)

SPWD के किसानों के लिए "बांस की खेती" विषय पर दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम

वन उत्पादकता संस्थान, रांची द्वारा Society for Promotion of Waste-land Development (SPWD) के 15 प्रशिक्षणार्थियों के लिए "बांस की खेती" विषय पर दिनांक 04.05.2022 एवं 05.05.2022 को प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसके उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए संस्थान के निदेशक डा. नितिन कुलकर्णी ने कहा कि SPWD आदिम जनजातीय समूह पहाड़िया समुदाय के जीविकोपार्जन हेतु प्रयासरत है। पहाड़िया समुदाय असली जंगलों के रक्षक हैं लेकिन खाली एवं बंजर भूमि का उपयोग यदि बांस रोपण के लिए करते है तो किसानों का आयवर्धन होगा। इस प्रशिक्षण में बांस की विशेषता, बांस रोपण, पौधा तैयार करने, इनका विभिन्न प्रजातियों का विभिन्न उपयोग, मूल्यवर्धन, कृषि वानिकी में बांस आदि विषयों पर विस्तार से बताया जायेगा एवं कार्य को दिखाया भी जायेगा। निदेशक ने आगे संबोधित करते हुए कहा कि प्रशिक्षणार्थी प्रशिक्षण से पूर्ण लाभ लें एवं समुदाय आधारित बांस खेती कर अपनी आय को बढ़ावे। बातचीत एवं परिचर्चा कर कार्यक्रम से अधिकाधिक लाभ लें। हम आपके संपर्क में रहेंगे तथा आपके कार्ययोजना की जानकारी प्राप्त कर तकनीकी सहायता उपलब्ध कराते रहेंगे।

इससे पूर्व संस्थान के समूह समन्वयक (अनुसंधान) डा. योगेश्वर मिश्रा ने कार्यक्रम की रुपरेखा प्रस्तुत करते हुए तकनीकी एवं प्रायोगिक सत्र के कार्यक्रमों को विस्तार से समझाया। पहाड़िया जनजातियों को समाज के मुख्य धारा से जोड़ने के लिए SPWD के प्रयासों की सराहना की। उन्होने SPWD के बंजर भूमि विकास कार्यक्रम की चर्चा करते हुए झारखंड के भौगोलिक क्षेत्र में बंजर भूमि को रेखांकित करते हुए बताया कि इस क्षेत्र में बांस की खेती, बांस के साथ कृषि-वानिकी आदि कार्य कर झारख़ंड के साथ वन-सम्वर्धन में भी वो मदद कर सकते है। डा. मिश्रा ने SPWD के अन्य कार्यों को भी रेखांकित किया।

तकनीकी सत्र का आरंभ डा. योगेश्वर मिश्रा, समूह समन्वयक (अनुसंधान) के बीज तकनीक एवं बांस प्रवर्धन विषय पर प्रस्तुति से किया गया। उन्होने राष्ट्रीय बांस मिशन, बांस का क्षेत्रफल, बांस के प्रकार (Sympodial & Monopodial) आदि को विस्तार से बताया एवं लाभदायी प्रजाति का वर्णन करते हुए बांस पौधशाला के प्रकार, High-tech, Big Nursery एवं लघु नर्सरी आदि को बताते हुए बांस प्रवर्धन के सभी तकनीकी पहलुओं को बताते हुए बांस बीज संग्रहण, रोपण एवं अन्य गतिविधियों को विस्तार से बताया। श्री रवि शंकर प्रसाद, मुख्य तकनीकी अधिकारी ने इस दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में बांस प्रजाति के पहचान, बांस के उपयोग, मूल्यवर्धन तथा विदोहण को सिलसिलेवार ढ़ंग से समझाते हुए बांस वाटिका, बांस पौधशाला के प्रत्येक गतिविधि को क्षेत्रीय स्तर पर भी समझाया। श्रीमती अंजना सूचिता तिर्की, उप-वन संरक्षक, भा.व.से., ने बांस के साथ कृषि-वानिकी के अनुप्रयोगों को बताते हुए इसके लाभ को विस्तार से बताया। बांस के साथ औषधीय फसल, कृषि फसल एवं फलदायी वृक्षों के साथ कृषि माडल अपना कर होने वाले लाभ का भी आकड़ा वद्ध विश्लेषण प्रस्तुत किया। प्रति एकड़ बांस के साथ अदरख, हल्दी, कच्चू, अजवाईन, एलोवेरा आदि को अलग –अलग लगाकर किए गए शोध का परिणाम भी प्रस्तुत किया।

श्री महेश कुमार एवं उनके सहयोगियों ने प्रायोगिक स्थल पर बांस प्रवर्धन को विस्तार्पूर्वक समझाया। समस्त प्रशिक्षण कार्यक्रम में श्री एस.एन.वैद्य, श्री बी.डी.पंडित, श्री सूरज कुमार एवं श्री बसंत कुमार ने सहयोग किया।

समापन सत्र में डा. योगेश्वर मिश्रा सभी का प्रतिक्रिया पत्र (Feedback Form) लेकर उनकी प्रतिक्रियाओं पर विशेष चर्चा की तथा प्रत्येक सवालों का सरलता एवं रूचिकर ढ़ंग से समझाया। बांस शिल्पकला पर भी प्रशिक्षण का आश्वासन दिया।

आखिरी में श्री बी.डी.पंडित ने धन्यवाद ज्ञापन दिया एवं डा. योगेश्वर मिश्रा, श्रीमती अंजना सुचिता तिर्की एवं रविशंकर प्रसाद के द्वारा प्रतिभागियों को एक-एक बांस का पौधा एवं थोड़ा-थोड़ा बांस का बीज वितरित किया गया, जिससे अपने कार्य स्थल पर सभी बांस की नर्सरी विकसित कर सकें।

वन उत्पादकता संस्थान, रांची